खण्ड अ

1. (i) (A) कम उमर में शतरंज के क्षेत्र में नाम कमाना

(ii) (B) असफल होने से जीवन समाप्त नहीं होता।

(iii) (D) असफलताओं से शिक्षा ग्रहण करना

(iv) (B) अहंकार और आक्रोश की इच्छा को

(v) (C) कथन सही है लेकिन कारण उसकी गलत व्याख्या करता है।

2. (i) (A) अस्वस्थ होना, वेतन कटौती, व्यावसायिक मंदी

(ii) (D) संतोषी होना

(iii) (B) विभिन्न चिंताओं से घिरे होने के कारण

(iv) (C) कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या

(v) (D) I, II, IV

3. (i) (B) सर्वनाम पदबंध

(ii) (C) क्रिया पदबंध

(iii) (C) विशेषण पदबंध

(iv) (A) दोनों कबूतर अब रात-भर खामोश और उदास बैठे रहते हैं।

(v) (C) क्रिया पदबंध

4. (i) (D) सूरज ढले आँगन के पेड़ों से पत्ते मत तोड़ो।

(ii) (C) मिश्र वाक्य

(iii) (B) संयुक्त वाक्य

(iv) (D) कहा गया है कि वह केवल मानव जाति के ही नहीं सभी पशु-पक्षियों

(v) (B) 1-(III), 2-(I), 3-(II) Extra

5. (i) (C) नज़र रखना - ध्यान रखना

(ii) (D) तलवार खींचना

(iii) (A) तारे तोड़ लाना

(iv) (B) छक्के छुड़ाना

(v) (D) गुड़ गोबर कर देना Extra

(vi) (C) चार चाँद लगाना Extra

6. (i) (B) तत्पुरुष समास

(ii) (D) अव्ययीभाव समास

(iii) (C) भला है जो मानस

(iv) (C) पंजाब - द्विगु समास

(V) (D) तीन हैं लोचन जिसके - बहुव्रीहि समास Extra

7. (i) (B) I, III

(ii) (C) नेक, साहसी, मददगार

8. (i) (B) अहंकार

(ii) (D) उनसे हमदर्दी हो आई

(iii) (B) उनके रौब में थोड़ी नरमी आ गई

(iv) (D) कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है

(V) (C) II, III

9\. (i) (D) I, IV

(ii) (C) विशाल दर्पण के रूप में

10\. (i) (D) मृत्यु तो अवश्यंभावी है

(ii) (C) महान उद्देश्य के लिए मरने वाले की मृत्यु

(iii) (B) जिस मृत्यु को याद न किया जाए

(iv) (A) अपने लिए जीना - खाना

(v) (C) I, III

खण्ड ब

11. (क) लेखक का हरिहर काका से घनिष्ठ जुड़ाव था। हरिहर काका बचपन में लेखक को बहुत प्यार-दुलार करते थे। वे लेखक को अपने कंधे पर बैठाकर घुमाया करते थे। एक पिता का अपने पुत्र के प्रति जितना प्रेम होता है, उससे कई गुना अधिक प्रेम हरिहर काका लेखक से करते थे। गाँव में हरिहर काका की सबसे पहले दोस्ती लेखक से ही हुई थी। हरिहर काका लेखक से कुछ भी छिपाते नहीं थे। उसे खुलकर सारी बातें बता दिया करते थे। इन सभी तर्कों से यह सिद्ध है कि हरिहर काका और लेखक का घनिष्ठ जुड़ाव था।

(ख) लेखक को बचपन में प्रकृति अधिक मनोरम लगती थी। बचपन में फूल अधिक खुशबूदार और हरियाली अधिक हरी लगती थी। लेखक के अनुसार जब उसने मनोविज्ञान पढ़ा तो उसे पता चला कि यह सब बालमन के कारण ऐसा प्रतीत होता था। उस समय उनके विद्यालय की क्यारियों में गुलाब, गेंदा एवं मोतिया की दूध-सी सफ़ेद कलियों वाले पुष्प लगे होते थे। वह और उसके मित्र चंदू चपरासी से आँख बचाकर फूल तोड़ लिया करते थे। बाद में उन फूलों का क्या होता, यह लेखक को ज्ञात नहीं। उसके अनुसार या तो उसकी माँ कपड़े धोते वक्त उन

फ़ूलों को निकालकर फ़ेंक देती या तो वह स्वयं ही उन्हें बकरी के मेमनों की भाँति चर जाया करता। इसके अतिरिक्त उसे अपने विद्यालय के रास्ते के दोनों ओर उगे, बड़े ढंग से कटे - छँटे ~~अलिआर~~ अलियार के वृक्ष भी सुंदर लगते जिन्हें वह डंडी कहा करता था। सचमुच प्रकृति बचपन में अधिक सुंदर प्रतीत होती है।

12- (क) श्रीकृष्ण के दर्शनों के लिए मीरा अनेकों कार्य करने को तैयार हैं - वे उनके विहार के लिए बाग - बगीचे लगाना चाहती हैं, उनके दर्शन सुगमता से प्राप्त कर सकें इसलिए ऊँचे - ऊँचे महलों में खिड़कियाँ बनवाना चाहती हैं, वृंदावन की कुंज - गलियों में कृष्ण की लीलाओं का गुणगान करना चाहती हैं और वे कुसुंबी रंग की साड़ी पहनकर यमुना के तट पर अपने आराध्य का आधी रात तक इंतज़ार करने को तत्पर हैं। इनसे यह ज्ञात होता है कि मीराबाई ने श्रीकृष्ण को प्रियतम के रूप में देखा है। वे श्रीकृष्ण को अपना सर्वस्व समर्पित कर चुकी हैं। वे श्रीकृष्ण के दर्शन, नाम - स्मरण रूपी जेब ख़र्च और भक्ती रूपी जागीर तीनों प्राप्त कर अपना जीवन सार्थक बनाना चाहती हैं। इनमें उनका दास्य भाव भी साफ़ झलकता है। वे कृष्णमय हो गई हैं।

(ग) 'आत्मत्राण' कविता की निम्न बातें मुझे बहुत प्रेरित करती हैं:-

(i) आत्मविश्वास और मनोबल - कवि ईश्वर से यह नहीं कहते कि वे उनके जीवन में विपदाएँ, दुख, निराशाएँ एवं वंचनाएँ न दें बल्कि उनसे जूझने की शक्ति दें। वे कितनी भी विपरीत परिस्थिति में अपना आत्मविश्वास नहीं खोना चाहते। वे ईश्वर से बचाव की नहीं बल्कि साहस की माँग करते हैं। वे यह चाहते हैं कि चाहे सब लोग उन्हें धोखा दें, सब दुख उन्हें घेर लें पर उनका बल-पौरुष न हिले, वे हर कष्ट धैर्य से सह लें।

(ii) ईश्वर में आस्था - कवि ईश्वर को कहते हैं कि वे यह चाहते हैं कि दुख में भी वे ईश्वर के अस्तित्व पर शक न करें, ईश्वर के प्रति उनका विश्वास न टूटे, उनकी आस्था ईश्वर के प्रति कभी भी कम न हो। वे सुख के दिनों में भी हर क्षण ईश्वर को याद करना चाहते हैं, उन्हें भूलना नहीं चाहते। इस प्रकार कवि ईश्वर को सुख-दुख दोनों में सम भाव से याद करना चाहते हैं।

13. (क) 'नेचर की सहनशक्ति की एक सीमा होती है' – इसके परिप्रेक्ष्य में दो उदाहरण निम्नलिखित हैं :-

(i) मनुष्य की सब कुछ बटोर लेने के कारण नित नई बस्तियाँ स्थापित हो रही हैं। इससे पशु-पक्षियों के स्थान छीन लिए जा रहे हैं। साथ ही वृक्ष, पहाड़ आदि काटे जा रहे हैं जिसके कारण प्रकृति भी अपना वेग दिखा रही है जैसे ~~गरमि~~ गरमियों में ज़्यादा गरमी पड़ रही है, बेवक्त की बरसातें हो रही हैं। ज़लज़ले, सैलाब, तूफ़ान और नित नए रोग फ़ैल रहे हैं। ये सब मनुष्य द्वारा स्थापित बस्तियों को तो ध्वस्त करते ही हैं साथ ही पृथ्वी के वातावरण को भी ठेस पहुँचा रहे हैं।

(ii) मुंबई में महानगरीकरण के लिए बिल्डर बड़ी-बड़ी बिल्डिंगें खड़ी कर रहे हैं। समुद्र तट पर बस्तियाँ बन रही हैं जो समुद्र को पीछे की ओर धकेलती जा रही हैं। समुद्र ने पहले अपनी फैली टाँगें समेटीं, फ़िर उकड़ू बैठ गया, फ़िर खड़ा हो गया और जब खड़े रहने की भी जगह न बची तो उसने अपनी ऊँची लहरों से तीन जहाज़ों को बच्चों की गेंद की तरह फेंक दिया – एक बांद्रा में कार्टर रोड के पास, दूसरा वर्ली में और तीसरा गेटवे ऑफ़ इंडिया पर जाकर गिरा। वे कभी ठीक नहीं हो पाए।

(ख) 'वे सोने में ताँबा नहीं बल्कि ताँबे में सोना मिलाकर उसकी ~~किम~~ कीमत बढ़ाते थे।' - यह कथन गाँधीजी के लिए कहा गया है क्योंकि गाँधीजी व्यावहारिकता की कीमत समझते थे। वे कभी भी अपने शुद्ध सोने रूपी आदर्शों को व्यावहारिकता के स्तर पर नहीं गिरने दिया करते थे। बल्कि व्यावहारिकता को अपने आदर्शों के स्तर पर चढ़ाकर उनकी कीमत को बढ़ाते थे। वे समाज को ऊपर से नीचे गिराने की बजाय सबको नीचे से ऊपर उठाने का प्रयास करते थे। इसलिए कुछ लोगों ने उन्हें 'प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट' भी कहा। वे अगर व्यावहारिकता का पुट न देते तो कोई भी उनकी आवाज़ नहीं सुनता, वे केवल बोलते रह जाते। व्यावहारिकता के इस्तेमाल से ही वे लोगों को अंग्रेज़ों के खिलाफ़ एकजुट कर पाए थे और साथ ही उन्होंने जो भी व्रत लिए उनका आजीवन और ईमानदारी से पालन किया। एक बार अपने कपड़ों की होली जलाई तो सदैव एक धोती में ही रहे। इन सभी कारणों से उपर्युक्त कथन की सार्थकता स्पष्ट होती है।

14. (ख) बढ़ती नारी - शक्ति

आज के इस बदलते परिवेश में नारी - शक्ति भी सशक्त व प्रबल होती जा रही है। नारी शक्ति ने स्वबल से ही अपनी आन - बान - शान ऊँची की है। पहले के समय में नारियों को कमज़ोर समझा जाता था, उन्हें घर पर कैद करके रखा जाता था। सभी नारियों को बोझ समझते थे परंतु नारियों ने इस मनसा को पूरी तरह गलत घोषित कर दिया है। उन्होंने अपने मज़बूत क़दमों के सहारे अपना सिर ऊँचा किया है। उन्होंने पुराने रीति - रिवाजों - जिनमें उन्हें कम समझा जाता था को तोड़ दिया है, जैसे - स्त्रियाँ अब घर के बाहर भी काम करने लगी हैं, पहले जो काम केवल पुरुषों द्वारा ही किए जाते थे, उन्होंने वे भी करने शुरू कर दिए हैं। इसमें उनका शिक्षित होना भी एक प्रमुख कारण है। महान स्त्रियाँ जैसे - पंडिता रमाबाई, आदि ने इसमें प्रमुख भूमिका निभाई। उनके प्रयासों की बदौलत आज स्त्रियों ने जीवन के हर क्षेत्र में अपना अटल वर्चस्व स्थापित किया है चाहे वह खेल, सिनेमा या विज्ञान, कुछ भी क्यों न हो। उदाहरण के लिए कल्पना चावला भी हैं जिन्होंने पृथ्वी के बाहर भी ~~स्त्रि~~ स्त्रियों का नाम रोशन किया। सचमुच नारी - शक्ति बढ़ती ही जा रही है। 05

15.(क) परीक्षा भवन
अ॰ब॰स॰ विद्यालय
क॰ख॰ग॰ नगर

दिनांक- 21/02/2024

सेवा में
नगर-निगम अधिकारी
क॰ख॰ग॰ नगर निगम
क॰ख॰ग॰ नगर

विषय- कूड़े संबंधी समस्या हेतु।

महोदय,
सविनय निवेदन है कि मैं आपके नगर निगम के अंतर्गत आनेवाले मोहल्ले च॰छ॰ज॰ ~~सोसाईटी~~ का निवासी हूँ। कई दिनों से हमारे ~~सोसाईटी~~ मोहल्ले के कूड़ेदान में गंदगी का ढेर लगा है और कूड़ा नहीं उठाया जा रहा है।
इससे हमारे मोहल्ले के अंदर दाखिल होते वक्त व बाहर निकलते वक्त भयंकर बदबू आती है और समस्त निवासियों का

जी घबराने लगता है। साथ ही कूड़े के ढेर में मच्छरों ने घर बना लिया है जिससे हमारे मोहल्ले के निवासियों पर डेंगू या मलेरिया होने का खतरा हर वक्त मंडराता रहता है। लोगों को घर से बाहर निकलते हुए भी डर लगता है। हमने इस समस्या के संदर्भ में नगर-निगम के स्वच्छता सचिव से संपर्क करने का प्रयत्न किया परंतु वे महाशय तो कोई उत्तर ही नहीं देते।

अतः आपसे अनुरोध है कि आप जितना जल्दी हो सके, इस समस्या का समाधान करवाएँ।

सधन्यवाद

भवदीय

अजय

17

16.(ख)

From: abc123@gmail.com	
To: xyz456@gmail.com	
CC.....	
Bcc.....	

विषय- खाद्य पदार्थों में मिलावट पर अंकुश लगाने हेतु।

~~महोदय~~, स्वास्थ्य अधिकारी महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं आपके नगर निगम के अंतर्गत आने वाले च.छ.ज. मोहल्ले का निवासी हूँ। आजकल हमारे ~~विद्यालय~~ मोहल्ले के कई व्यापारी खाद्य पदार्थों में मिलावट कर उन्हें सस्ते दामों में बेच रहे हैं जिससे लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ रहा है और बहुत-से लोगों को तो अस्पताल तक में भरती किया गया है।
अतः आपसे अनुरोध है कि जल्द से जल्द खाद्य पदार्थों में मिलावट पर अंकुश लगाने के लिए कड़े कदम उठाएँ।

05

सधन्यवाद
भवदीय
स०श०ष०

17. (क)

अ०ब०स० स्कूल बैग उद्योग

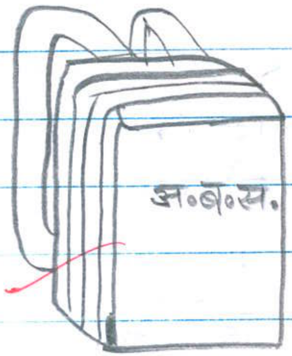

"अब स्कूल बैग को भार नहीं उपहार समझें।"

हमारे स्कूल बैग की विशेषताएँ :-

- ज्यादा जगह
- सुंदर
- टिकाऊ
- सस्ता
- अनेक रंग उपलब्ध

मूल्य केवल ₹510/-

"एक बार लाएँ, पूरे विद्यार्थी जीवन भर चलाएँ।"

पता- 204, 'बी', क०ख०ग० मोहल्ला, च०छ०ज० नगर; वेबसाईट: abc123.com

संपर्क करें- 9890XXXXXX

18. (क)

अ० ब० स० विद्यालय
क० ख० ग० नगर

दिनांक - 21|02|2024 (कक्षा VI - X के छात्रों हेतु)

सूचना

अंतर्विद्यालय कहानी प्रतियोगिता में नाम लिखाने हेतु

सविनय निवेदन है कि हमारे विद्यालय में अंतर्विद्यालय कहानी प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक - 26|02|2024 को होने जा रहा है। ~~इच्छुक~~ प्रतियोगिता में भाग लेने को इच्छुक विद्यार्थी सांस्कृतिक सचिव के पास अपने नाम दिनांक - 23|02|2024 से पहले ~~लिखवा दें~~। लिखवा सकते हैं। आशा है कि आप सब अधिक-से-अधिक संख्या में भाग लेंगे।

सधन्यवाद
च० छ० ज०
सांस्कृतिक सचिव